CHAPTER - 3
कल्लू कु म्हारकी उनाकोटी

बोध प्रश्न

प्रश्न 1:
' उनाकोटी ' का अर्थ स्पष्ट करते हुए बतलाएँ कि यह स्थान इस नाम से क्यों प्रसिद्ध है ?

उत्तर 1:
त्रिपुरा में एक जगह का नाम उनाकोटी है उनाकोटी का अर्थ होता है एक करोड़ से एक कम इसके बारे में एक दंत कथा प्रसिद्ध है कि कल्लू नाम का एक कुम्हार था उसने भगवान शिव की भक्ति की भगवान के प्रसन्न होने पर उसने भगवान शिव के साथ कैलाश रहने की प्रार्थना की इससे बचने के लिए भगवान शिव ने शर्त रखी कि यदि वह एक रात में भगवान शिव की एक करोड़ मूर्तियाँ बना देगा तो वे उसे अपने साथ कैलाश पर्वत पर रहने की अनुमति प्रदान कर देंगे कल्लू कुम्हार ने मूर्तियाँ बनाना शुरू कर दीं किन्तु सुबह होने पर सारी मूर्तियाँ बन चुकी थीं मगर गिनने पर एक मूर्ति कम निकली और शर्त के अनुसार कल्लू कुम्हार वहीं रह गया इसलिए इस जगह का नाम उनाकोटी पड गया।

प्रश्न 2:
पाठ के संदर्भ में उनाकोटी में स्थित गंगावतरण की कथा अपने शब्दों में लिखिए ।

उत्तर 2:
पौराणिक कथा के अनुसार श्रृषि भागीरथ कठोर तपस्या के बाद गंगा माँ को धरती पर लेकर आए थे गंगा यदि अपने पूरे वेग से पृथ्वी पर आती तो पृथ्वी धँस जाती गंगा के इस वेग को रोकने के लि भगवान शिव तैयार हो गए और गंगा के वेग को अपनी जटाओं में रोककर कम कर दिया और धीरे–धीरे गंगा पृथ्वी पर उतर आई । वहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य ऐसा है कि ऊँचं–ऊँचे पहाडों की दूर तक फैली श्रृंखलाएं और उन पर से गिरते हुए झरने जिन्हें देखकर ऐसा लगता है कि भगवान शिव की जटाओं से साक्षात् गंगा उतर रही हो ।

प्रश्न 3:
कल्लू कुम्हार का नाम उनाकोटी से किस प्रकार जुड़ गया गया ?

उत्तर 3:
कल्लू कुम्हार भगवान शिव का परम भक्त था और वह उनके साथ कैलाश पर्वत पर जाना चाहता था , परन्तु भगवान शिव की शर्त के अनुसार उसे एक रात में शिव की एक करोड़ मूर्तियाँ बनानी थीं कल्लू कुम्हार कैलाश पर्वत पर जाने के लिए मूर्तियाँ बनाने में जुट गया जब सुबह मूर्तियाँ गिनी गईं तो एक मूर्ति कम निकली । भगवान शिव को बहाना मिल गया तथा वे उसे छोड़कर कैलाश पर्वत पर चले गए और कल्लू कुम्हार इन मूर्तियों के साथ यहीं रह गया ।

प्रश्न 4:
‘ मेरी रीढ़ में झुरझुरी–सी दौड़ गई ’ –लेखक के इस कथन के पीछे कौन सी घटना जुड़ी हुई है ?

उत्तर 4:
लेखक शूटिंग करने में व्यस्त था इसी समय सी. आर. पी. एफ. के एक जवान ने आकर बताया कि निचली पहाड़ियों पर जो दो पत्थर पड़े हैं यहीं दो दिन पहले विद्रोहियों ने एक जवान को मार डाला था , इतना सुनते ही लेखक का शरीर काँप गया और उसे लगा कि उसकी रीढ़ में एक झुरझुरी–सी दौड़ गई ।

प्रश्न 5:
त्रिपुरा ‘ बहुधार्मिक समाज ’ का उदाहरण कैसे बना ?

उत्तर 5:
त्रिपुरा में लगातार बाहरी लोग आते रहते हैं जिस कारण यह बहुधार्मिक समाज का उदाहरण बन गया है यहाँ उन्नीस अनुसूचित जनजातियाँ और विश्व के चार बड़े धर्मों का प्रभाव है । बौद्ध धर्म की भी यहाँ मान्यता है ।

प्रश्न 6:
टीलियामुरा कस्बे में लेखक का परिचय किन दो प्रमुख हस्तियों से हुआ ? समाज कल्याण के कार्यों में उनका का क्या योगदान था ?

उत्तर 6:
टीलियामुरा कस्बे में लेखक का परिचय हेमंत कुमार जमातिया जो लेकगायक थे और समाज सेविका तथा देखने में साधारण सी गृहणी मंजु ऋषिदास से हुआ था जो पंचायत में अपने वार्ड का प्रतिनिधित्व करती थीं और उन्होंने अपने वार्ड में नल लगवाने , नल का पानी पहुंचाने और गलियों में ईंटें बिछवाने का कार्य किया था

प्रश्न 7:
कैलाशनगर के जिलाधिकारी ने आलू की खेती के विषय में लेखक को क्या जानकारी दी ?

उत्तर 7:
जिलाधिकारी ने बताया कि किस प्रकार यहाँ उन्नत किस्म के आलू की खेती की जाती है बुआई के लिए पारंपरिक आलू के बीज की जरूरत दो मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर होती है जबकि टी.पी.एस. की सिर्फ सौ ग्राम मात्रा एक हेक्टेयर के लिए पर्याप्त होती है । अब तो यहाँ से टी.पी.एस. का निर्यात पड़ोसी राज्यों में भी किया जा रहा है ।

प्रश्न 8:
त्रिपुरा के घरेलू उद्योगों पर प्रकाश डालते हुए अपनी जानकारी के कुछ अन्य घरेलू उद्योगों के विषय में बताइए ।

उत्तर 8:
त्रिपुरा में अनेक प्रकार के घरेलू उद्योग हैं जैसे बाँस के खिलौने बनाना , अगरबत्ती बनाना गले में पहनने वाली मालाएं बनाना ।अगरबत्ती के लिए सींकों को तैयार करके गुजरात और कर्नाटक भेजा जाता है ।हमारे देश में अन्य कई प्रकार के घरेलू उद्योग भी हैं जैसे – खिलौने बनाना , चटाइयाँ बनाना , हाथ के पंखे बनाना आदि